



॥ वाक् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३७५ ॥ प्रणम्य शिरसा विष्णु त्रैलोक्याधिपतिं प्रभू नानाशास्त्रोक्त नैव द्येः राजनी
नी समुच्चये ॥ १ ॥ त्रैलोक्यः अविद्यति श्रीनारायणालाई नमस्कार गरेः नानाशास्त्रं हि कया को राज
नी नीत कहें छु ॥ १ ॥ अप्राप्येवं मिदं शास्त्रं नरे जाइयति तत्तत् ॥ धर्मोपदेश विनयं कार्यो कथ्य
शुभाशुभम् ॥ २ ॥ यो सास्त्रयुगाय छिः धर्मश्च धर्मकार्यश्च अकार्यश्च भूः शुभज्ञानश्च अज्ञानजा
न्या ऊँ २ तदहं संप्रवक्ष्यामी नराणां हीनकाम्यया ॥ येन प्रज्ञा प्रवर्द्धते मा नैव हीनकारिणी ॥ ३ ॥ मनुच
हर्षको हीनगर्वा निमिन्नम कहें छु मनुष्यलाई यो शास्त्र ले आमा ले हीन गन्याउँ हीन गन्या छ ॥ ३ ॥ मूल
मुनं प्रवक्ष्यामी नानके ननु भाषितं ॥ येन विद्वान्मात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रजायते ॥ ४ ॥ मूल मुनका कर म कह
छु अघी वानक कृषी धरले आइ पुन लाई य हा उदा भया ह पुन हो मुन यो विन लाई सो सास्त्र युगा
पछी सर्वे न्याय निती पाप धर्म शुभ अशुभ अन्या ऊँ ४ ॥ मूल र्वे शो यो यदेशेन उदासी भरेने
नव ॥ दिवना सं प्रयोगेन पण्डितो व्यवसीदती ॥ ५ ॥ मूल र्वेक न उयदेश दिया को उदासा धि लाई ग

॥ राम ॥

ASHA ARCHIVES

2400

ति
 ह नादि या को श नू सी त प्री ग न्या को व्य र्थ ऊं छ उ छि मा न् य नी ना सिं छ ॥ ५ ॥ उ नी भी सह सं य र्क परि
 ने सह सं क था ॥ ऊ ली भी सह मि त्तं ऊ र्वा नो ना व सी द नी ॥ ६ ॥ उणी ज न सी त मि त्त ग र्ज प श डी त ह रू
 संग क था वा र ग र्ज ऊ ली ज न सी त मि त्त ला उ नू र ती ग न्या य छी त्या म नु म्य के ले य नी ना सिं दे न ॥ ७ ॥
 उ न्म ता नां उ जं गा नां म श्र या नां च दं ती नां ॥ स्त्री नां रा ज कु ला नां व वि श्वा स ती ग ता यु व ॥ ८ ॥ व ऊ ला सी त
 स र्य सी त हा नी सी त सा धि सी त रा ज कु ल सी त र ती स्त्री त वि श्वा स ग न्या ना सी छ ॥ ९ ॥ वै री नां सह वि
 श्वा सं यो न र क र्ज मि छ नी ॥ स दृ द्या मे ष सं सु प्र य गित प्र नि उ त्थ ते ॥ १० ॥ वै रि सी त वि श्वा स ग र्ज जो इ द्या
 ग र्छ त्या म नु म्य रू व क ण द व्या मा व क्षी मु त्या को ख स्या प्रा त ज स्तो ग र्ज उ जीं छ त स्तो ग र्ज प दि था हा या
 उ छ ॥ ११ ॥ ध न था न्य प्र यो गे कु वि र ने छ द ॥ आ हारे व व हारे व त्त क ल आ स दा भ वे त् ॥ १२ ॥ ध न
 क मा उ द्या मा धा न प्र यो ग ग र्ज दि द्या र्क के ही व लु शं मे रू ग र्ज स्वा श डी लि न्या लिं दा दिं दा र ति थो
 क मा ल ज्वा न मा नू ॥ १३ ॥ न उ रू स र ता ना ना न उ रू स र सी पि ता ॥ य स्तारे ती म हा धो रं सं सा र द दि उ

॥ वाक ॥

॥ २ ॥

स्तरं ॥ १० ॥ गुरु वर से पर आमायनी वावायनी छैन जो गुरु ले यो संसार स मुद्र न न रि सकनु तारि दिछ ॥ १० ॥
माता गंगा समंती थं पिता पुष्कर मे वव गुरु के दार समंती थं माता गंगा पुन पुन ॥ ११ ॥ आमा गंगा वावा
पुष्कर तीर्थ गुरु के दार तीर्थ वर व ऊ न माता भन्या गंगा वर मान ॥ ११ ॥ विद्या रूप क रूपाना समा
रूप न पश्चिना ॥ को किलाना स्वरूप नारि रूप प्र निवृता ॥ १२ ॥ ऊरु पी को रूप विद्या ऊ न पत्नी को रूप
समा हो को इ लिको रूप स्वर हो स्त्री को रूप प्र निवृता हो ॥ १२ ॥ नव विद्या समो वधु नव व्याधि समो रिपू
॥ नवायें ते सम स्ने हो नव देवा दू पर वर ॥ १३ ॥ विशा वर वर भाई को ही छैन आ पूरा सरीर माहा उत्पन्न भ
या को रोग वर वर शक्र को ही छैन छो रोग वर पिआ रोग को ही छैन देव देवी वलियो अरु को ही छैन ॥ १३ ॥
विद्या प्रवासि नो मित्र भाष्या मित्र गृहे पुन ॥ आनुरथ्यो वध मित्र धर्म मित्र पर वर ॥ १४ ॥ विदेश विद्या मि
त्र ऊ छ घर मा स्वाधि मित्र ऊ छ रोगों को मित्र औ शयी ऊ छ पर वर को मित्र धर्म ऊ छ ॥ १४ ॥ उरावी ना वि
ष विद्या अजीर्न भोजन विष ॥ विष गोली दरिद्र स्व दृष्ट स्व नरु नी विष ॥ १५ ॥ घटि यागरी पद्या को विद्या वि

॥ राम ॥

॥ २ ॥

पकी छ न पची क न खाया को अन्न आदि व. ठेर पारिया कंगाल लाई विषकी छ उठकी नरुणी स्त्री विष
॥१५॥ अनाभा से हता विद्या नित्य हा से हता स्त्रिय कु वीर्य न हतं क्षेत्र भृत्य दो वै हतानुप ॥१६॥ अभाशन ग
या विद्या ना सिंद सदा हास्या सा छि ना सिंद बीज शठिया यथा वेत ना सिंद कु मंत्री भया राजा ना सिंद १६
यस्य पुत्रो न विंदा शो न भूरो न व पशती न ॥ अथ कालं कुल तस्य न क्व व नैव सर्वरी ॥१७॥ जलो छो रे परिड
न यनी छे न उछी भूरो यनी छे न तस्ते कुल वन्दु मान भया की रात्री जे अथारो ॥१७॥ सर्वरी दीपक चन्द
प्रभाते रवि दीपक ॥ नैलोक्य दीपक चन्दं धर्म सुपुत्र कुल दीपक ॥१८॥ रात्री को दीप चन्द माहो दिन
को दीप श्री सूर्य हो नितै लोक को दीप धर्म हो कुल को दीप पुत्र हो गुण शान विद्या साधु धर्मात्मा
अताल स्य भया को ॥१८॥ जनैता चो पनेता चो यस्तु विद्या प्रिय रूनी ॥ अन्न दाता भयनाता पंचैते पित संसृ
ता ॥१९॥ जन्मा उन्मा १ व्रत वध विवाहादी गरी दिव्या २ विशा पक्ष उन्मा ३ अन्न दिव्या ४ अन्न भय दिव्या ५
यदेवी रक्षा गर्भा ५ ई पांच पिता भने का छन ॥१९॥ एरूपत्नी राजपत्नी मित्रपत्नी तथैव चापत्नी माता स्वा

॥ वाक ॥

॥ ३ ॥

माता व पंवे ते मातरस्तु ता ॥ २० ॥ गुरु की पत्नी गुरु की भार्या १ राजा की पत्नी राणी २ मित्र की आमा मित्रा ३ आ
मा स्त्री की माता सा सु ४ आ प्री आ मा ५ ई पा व माता भन्या का छ न ॥ २० ॥ लाल पद पंचवर्षा नी दशवर्षा नी तो द
ये ॥ संप्राप्ते वो द से व र्व पुत्र मित्र व जा चरे ॥ २१ ॥ पांचवर्ष से म लाल ना गर्नु बा हां उ प्रा न दशवर्ष से म
सा सना ता द ना गर्नु सो ह व र्व ला ग्पा य छी पुत्र क ने मित्र व री व र व्यवहार गर्नु ॥ २१ ॥ लाल ना व ह वो दो वा
ता द ना व ह वो गुणा ॥ त स्मा त पुत्र व शिष्य व ता द ये छ न तु लाल ये ॥ २२ ॥ लाल ना ग न्या को व दो दो व ऊ
ऊ छ ता द ना ग न्या को व ऊ गुण ऊ छ त स्का र गा पुत्र र सिष्य ह रु लाई ता द ने गर्नु लाल ना न गर्नु ॥ २२ ॥ र
आ भ्या सो यदि न स्या तां प्रज्ञा या किं प्रयोजनं ॥ ता उ भो यदि न स्या तां प्रज्ञा या किं प्रयोजनं ॥ २३ ॥ वि शा
प ह नु मन प नी छ अ भ्या स प नी ग छ त उ छी न भ या प नी जा का ऊ छ ज स्का प ह नु मन प नी छे न अ
भ्या स प नी ग दें न त उ छि ले मा न क या गर्नु ॥ २३ ॥ पुत्रा लु वि वि धे सा स्त्रे नि यो ज्या स त तं व र्थे ॥ नी ती शा व
द्धि सं य न्ना भ वं ती र व लु पू जि ता ॥ २४ ॥ जा न्या मो नि स ल्ये छो रा ह रु लाई अ ने क सा स्त्र मा ला उ नू नी ति

॥ राम ॥

॥ ३ ॥

जी न्या उद्धी वंत भया लोक लेख जा गढ़ न ॥ २४ ॥ पठ पुत्र कि माल स्य म पथो भारवाहक ॥ पठ संपुज्य ते राजा
पठ पुत्र दिने दिने ॥ २५ ॥ हे पुत्र अल सीन गरु पद न पद्या भारि वीक नु यर्ला यस्या ग जाले पनी पूजा गर्ला त
सर्थ दिन दिने पद ॥ २५ ॥ गु शोषु क्रिय तां यत्न किमतो न्य प्रयोजनं ॥ विक्रियं ते न घंठा भीगा भक्षी रविव
र्जिता ॥ २६ ॥ अरु भृंगार गरी प्रयोजन है न उदन भया का गाई नाई घंठ वाध्या ले के ही मोल जा दे न
त ॥ २६ ॥ न रस्या भरणं रूपं रूप स्या भरणं गुणं ॥ गुण स्या भरणं ज्ञानं ज्ञान स्या भरणं क्षमा ॥ २७ ॥ म
नुष्य को गहना भन्या रूप ही रूप को गहना गुण ही गुण को गहना ज्ञान ही ज्ञान को पनी गहना क्षमा
ही ॥ २७ ॥ गुणं पृष्ठं सिमा रूपं शीलं पृष्ठं स्वमा कुलं ॥ सिद्धिं पृष्ठं स्वमा विशा भोगं पृष्ठं स्वमा धनं ॥ २८ ॥ म
नुष्य ले गुण सोधन रूप न सोधन शील सोधन कुल न सोधन सिद्धि सोधन विशा मान न सोधन भो
ग गह की गढ़ न भनी सोधन धन न सोधन ॥ २९ ॥ अगुण स्य हतं रूपं असील स्य हतं कुलं ॥ असीध स्य
हतं विशा अ भोग स्य हतं धनं ॥ २९ ॥ गुण न भया का रूप व्यर्थ छ शील न भया का कुल व्यर्थ छ सिद्धि न भ

॥ वाक ॥

॥ ४ ॥

याविशारेथं भोगनगन्याधनवेथं ॥ २९ ॥ गुणं भूयायते रूपं शीलं भूयायते कुलं ॥ सिद्धिं भूयायते
विशारेथं भोगनगन्याधनं ॥ ३० ॥ रूपकोशो भागशाले कुलकोशो भागीशाले कुलकोशो भागि
दिले कुलकोशो भागि ॥ ३० ॥ सुकुले योजयत् कन्या पुत्रं विशासु योजयेत् ॥ व्यशने यो
जयेत् पुत्रं मित्रं धर्मं नियोजयेत् ॥ ३१ ॥ व्यशकुलमाहाद्योरिदितु व्यशनको अभासमेहाद्युत्तरी
लाउनु विशाको अभ्यासमहाद्योरालाउनु मित्रलाई धर्ममालाउनु ॥ ३१ ॥ नात्युश्च शिवरी मे
हूनातिनिमो रसानल ॥ व्यवसायसहायानां नानिपारे महीदधी ॥ ३२ ॥ उद्योगगन्यालाई सुमेरूप
नी वज्रतउद्यो न उद्योगगरी रहन्यालाई रसानरपनी गहियो न एको हो रलाया समुद्रपनी
नतरी सकनु छेन ॥ ३२ ॥ श्लोकेन चतुर्थेन पादेने काक्षरे ॥ अथ दिवशंकु र्यादानाथेन न क
र्मभी ॥ ३३ ॥ एकश्लोकले भयापनी आरु श्लोकले भयापनी एकपाउले भयापनी एकअक्षरले
भनीकनपनी दोनगरी कनपनी पही कनपनी एतीले दिनविताउनु खालिन रहनु ॥ ३३ ॥ योज

॥ राम ॥

॥ ४ ॥

नानां सहस्रानि ब्रजयातीः पिपिलिका ॥ अगच्छन् वेन ते यो यो पदमेकं न गच्छती ॥ ३४ ॥ कमिला हस्त हज
कोश भयायनीः एक होर हि ददे रघा पुग्द आयाशमानिस्त नहि द्या देवी गह ५ यनीः एक पाद लोयनी
जादेन ॥ ३४ ॥ शनै रथा शनै विद्या शनै पर्वतमारुह ॥ स नै धर्म श्रु काम श्रु व्यायाम श्रु शनै शनै ३५
धनक माउं दाधानु प्रयोग गदा विद्या पहदा पर्वत चर्दा धर्म गदा स्त्री सीत कोर स भाव को काम गदा
के ही धरि श्रम गदा सुस्तु सुस्तु गर्नु हृदये न गन ॥ ३५ ॥ गुरु श्रु श्रुषया विद्या पुस्तक रे न धने न वा ॥ अ
थ वा विद्यायां विचरुं थो नो पलभ्यते ॥ ३६ ॥ गुरु को सु सार गरी विद्या पात्रिं छुं ठे र धन भया परिउत प
ल्याः अथ वा एक थोक विद्या दीः अर्क विद्या पात्रिं छुं वी थो उपाय विद्या पाउं छे न ॥ ३६ ॥ एकाक्षरं
प्रदातारं यो गुरु ना भी मन्यते ॥ श्रानुयोनी सतंगत्वा वाङ्मल्लेष पि जायते ॥ ३७ ॥ एक अक्षर यहा उनेल
ई पनी जो गुरु भनी मादे न त्यस ले सय जो निकु कुर्को जो निमा जन्म भेई वा शाल भे जन्म ऊँ छे ॥ ३७ ॥
गुरु क प्रत्यया धीतं ना धीतं गुरु संनिधी ॥ नशो मध्य सभा मध्ये जाल गभई वस्त्रिय ॥ ३८ ॥ गुरु छे उपा

[illegible]

वाक
५

धनली. व्यापै. पुस्तक हेरी. जो पढ़े. तो सभा मध्ये जाल को गर्भ बाट भया को. वाल वजे सुहाउं देन. त सप
गुर्मुख वाट सुनू पछे ३८ सिलेशील मनान लस्य पाणिड तं मित्र संग्रहम् ॥ अचोर हरणी विद्या पंवे ते वाक् सो
निधी ३९ सिपालु मानि सको सिपु. सुसील भै रहनू. अलसिन मानू. पाणिड तं ऊनू. मित्र को शंग्रह गनु. ए
ति पां च गुण जो छे के ले पनी सके देन. नीले पनी नीने सके नन ३९ नही जन्म निजे छे तजे छे तं गुण
मुख्य ते ॥ गुणाद् गुणा तरयाती पयो दधि घृतं यथा ४० जन्म ले जे छे ऊं देन गुण ले जे छे ऊं छे. जस्तो उदय
ही भंडा. घिउ श्रेष्ठ ऊं छे तसे जन पछि को श्रेष्ठ ऊं छे ४० किं कुले न विशाले गुणवान् पुज्यते नर ॥ ध
नुर्वंश विशुद्धो पीनि गुण किं करि व्यति ४१ उलो कुल ले क्या ऊं छे जस्को गुण छे. उसे को पूजा ऊं छे. अ
ध्वंश देवी भया को धनु छे तपनी ता जो दोरि न भया काले क्या ऊं छे ४१ किं कुले न विशाले ने विद्या ही
नस्तु यो नर ॥ अकुली नो पी विद्वांशो देवते रपी पूज्यते ॥ ४२ ॥ बडा कुल मा जन्म्या पनी. विद्या न भया. सो
भा छे न. कुल मा फिके छे तपनी. पाणिड त भया. देवता ले पनी पूजा गर्खे न ४२ ना वार्थी भजते ना भया

राम
८

वदू पारं न गच्छती ॥ उतीर्णं गते पारं नो काया किं प्रयोजनं ॥ ४३ ॥ जाहां सम पारि गया को छे न ता हा सम उर्ग
षोज छन ॥ पारित री व ह्या पछि उर्ग को क्या काम छ ॥ ४३ ॥ एणा सर्वत्र पूज्यते पितृ व सो नि रर्थक ॥ वासु देव
न मद्रूपं ती व सुदेवन ते जना ॥ ४४ ॥ एणा भया को सर्वे ले पूजा गछे न वावे को ना उंचा हि दे न व सुदेव का छो र को
सर्वे ले पूजा गछे न व सुदेव लाई को ही पूजा गदे न ॥ ४४ ॥ एणा कुर्वंती हर त्वं दूरे पी व स तां स तां ॥ के त की गन्ध
मा घ्राय स्वयं गच्छति षट् पदा ॥ ४५ ॥ एणा जो छ ता धा भया पनी न जि के तु ल्या उं छ ज सै के की का गंध भ्रम र
खोजी जां छ त सै ॥ ४५ ॥ विद त्वं नृप त्वं नृ न हितु ल्य पराक्रम ॥ स्व देशे पूज्यते राजा वि द्वा सर्वत्र पूज्यते ॥ ४
६ ॥ विद्या वन कु नूर राजा कु नूर व र व र छे न राजा आ फ्रा देश मा कु लो छ प रि ड त जो सर्व त्रै ग यो प नी पू
जा गछे न ॥ ४६ ॥ ए के ना पि सु पु त्रै रा वि द्या यु के न सा धु नां ॥ कु लं पुरु व र्ति हे न व न्दे व प्र का श्य ते ॥ ४७ ॥
विद्या वन सा धु भ या ए के छा ए ले पु ग्छ ते स छो र ले कु ल को प्र का श ग छ ॥ ४७ ॥ विद्या या भा जनं क शि
त क शि द्वि व्य श्य भा ज्ञं ॥ उ भ यो भा जनं क शि द्वि क शि नो भ य भा ज्ञं ॥ ४८ ॥ को ही म नु व्य वि द्या का पा त्र कु न

॥ श्रीचाक

॥ ६ ॥

कोहिद्रव्यकापात्रऊन क तिलाई विश्वापनी धनपनी ऊदेन क तिलाई विश्वापनी धनपनी ऊँछ ॥ ४८ ॥
नमंति फलिनो वृक्षानमंति गुणिनो जना ॥ सुकका वृक्षमूर्खं च भिक्षते नैव मन्यते ॥ ४९ ॥ फल ऊन्या
वृक्षजो छन नम्र ऊँछन गुणा वंत मनुष्यपनी नम्र ऊँछ सक्का को का थर मूर्ख मनुष्यमा चिन्या छ
नम्र ऊँदेन ॥ ४९ ॥ नही कर्मा निवतारि संध्या काले प्रयोजे यद् ॥ आहारो मैथुनं निद्रा तथा स्वाध्याय
मेव च ॥ ५० ॥ संध्या काले मान्वा रथो क न गर्नु क्या क्या भने वानू मैथुन गर्नु निद्रा पहरु ॥ ५० ॥ आहारो
जायते व्याधिर्गर्भा कूरश्च जायते ॥ अलक्ष्मी कश्च सय्यायां स पथादायुष क्षय ॥ ५१ ॥ संध्या काले माषा
याय छि रेगी ऊँछ मैथुन गन्धा पछि कूर जन्म ऊँछ सुत्पा पछि लक्ष्मी क्षय ऊँछ पाथ गन्धा पछि
आयू क्षय ऊँछ ॥ ५१ ॥ वेद वेदांग तत्त्वज्ञ जय होम परायण ॥ आसिर्विद परे नित्य एकराज्ञो पुणे हि
त ॥ ५२ ॥ वेद वेदांग तत्त्वज्ञो जान्या जय होम जान्या आसिर्विद दिदे रहन्या एस्तोरा जा को पुणे हित
चाहिंछ ॥ ५२ ॥ प्राज्ञास्त्रिषोमही पाल छिद्र कर्म विवर्जित ॥ विबुद्धे बुपरित्यागी समीक स्वसम सुख

॥ राम ॥

॥ ६ ॥

॥५३॥ बुद्धि वन्त सुन्दर कसे को कुरका मन गर्ने उख सुख बरोवर मान्या गरि पमा थी पण्डित माथि दान ग
न्या एस्ता लाई राजा भनू ॥ ५३ ॥ कुल सिल गुणो पेत सत्य धर्म परायण ॥ प्रवीण पेक्षलो दक्षो राजा ध्यक्ष्यो वि
धीयते ॥ ५४ ॥ कुलीन शील लेयुक्त भयाको गुण वन्त सत्य धर्म तत्पर कुन्या सव वाट मा जान्या सुन्दर वज्र न
तुरय स्ता लाई राजा कान जिक तुल्या उनू ॥ ५४ ॥ कुरव्य शनि न लुथं मप्र गर्भ मना र्जवं ॥ अनाय व्यय कर्तार ना
धिय त्पनि योजयेत् ॥ ५५ ॥ वज्र ने क्रोध भयाको घटिया वेश न गर्न्या वज्र ने लोभी वाजवी वोलनु न सक न्या
वज्र ने वागी काम गर्न्या आम्या निभंदा अर्घ्या लोष वर्ग न्या ई मुषियान तुल्या उनू ॥ ५५ ॥ मूल वृत्ति हि तो धी ए सर्व
एत परिक्षक ॥ अविश्वा कथिन श्रेव धर्मा ध्यक्ष्यो विधीयते ॥ ५६ ॥ आफू पहिले को काम मात द पर कुटो
धैर्य गरी काम गर्न्या सुवे एत को परिक्षा गर्ने पवित्र रह न्या कुश्रम गर्दै रह न्या एस्ता लाई धर्मा धिकारि
तुल्या उनू ॥ ५६ ॥ आयुर्वेद कृता भ्यास सर्व शरीय दर्शन ॥ आर्य शील गुणो पेत एष वै द्यो विधीयते ॥ ५७ ॥ वै
असास्त्र मा अभ्यास गर्ने सवे धोक जान्या देष देष सीला ग्यो वडा को शील भयाको एस्ता वैद्य तुल्या उनू

वाक
७

५७ पितृपितामहोदक्षोसास्त्रज्ञोमिष्टपात्रक॥शुचिश्चाकथिनश्चैवशूषकारप्रशस्यते ५८ वावाकज्जु
देवीजान्यासास्त्रपतीजान्यामिथोगरीपकाउनुजान्यापवित्रसुघरकोमलेअंगकुनेएस्तालाईरसोईनु
ल्याउनु ५८ सकुडकुगृहीताथोलघुहसोजिताक्षर॥सर्वशास्त्रसमालोकीएषलेषकउच्यते॥५९
एकवेरसुन्याकोसमजनेवाओभुद्धगरीलेषन्यासभलिपिज्यान्यासवेसास्त्रहेरायाकोएस्तालाईलेषक
भनु ५९ ईगिताकारतत्रज्ञोवलवान्प्रियदर्शन॥अप्रमादिसदादक्ष्योप्रतिहारसुउच्यते ६० थोरो
अभिप्रायलेवुज्यावलियोदेष्टाघुसीलाग्योअहकारनभयाकोवहुतवतुरएस्तालाईदाया
भनिछ ६० समस्तकृतशास्त्रज्ञोपरिउतश्चजिताश्रय॥धैर्यसौर्यगुणोयेतसेनाध्यक्षोविधीयते
६१ सर्वेसास्त्रकोमतजान्यापरिउतमिहिनतृगर्न्याधैर्यवान्शूरकागुणभयाकोएस्तालाईसर्दारभने
कोछ ६१ समस्तहयसास्त्रज्ञोवाहनेव्ययराजित॥सौर्यविश्वगुणोयेतअश्वाध्यक्षोविधीयते ६२ सब
सालीहोत्रजान्याअशवारिमाकुसलेभयाकोभूरोयनीछपरकमीपनीछएस्तालाईतवेलाकोअधिका
रितुल्याउनु ६२ मेधावीवाक्पटुप्राज्ञपरचितोपलक्षक॥धीरोयथोक्तवादीवयमदूतोविधीयते॥

राम

७

॥६३॥ येक वेर भने को स म श्री रह न्या बोल दावतु र प रई को पे त को कु राजा ब हुत थी र ज स्ता को त लो नी ला
न्या र स्ता लाई इ त भ नू ॥६३॥ पार्थिव श्य च भृत्य स्व व दामि गुण ल क्षणा ॥ य न शं व द्ध ते राजा भा श ड गा र स्त
थे व च ॥६४॥ राजा य नि वा क र को प नी गुण ल क्षणा म भं छु ज्या ग री राजा प नी व रु छ ता कहं छु ॥६४॥
अ त ये व कु ली ना नां द या कु र्वं ती सा ध व ॥ आ दि म ध्या व सा ने षु न ते या श्ये ती वि क्रि या ॥६५॥ प रि ड ते षु
गुणा सर्वे मूर्खे दोषा लु के व ला ॥ त स्मा त् मूर्खे श ह श्रे षु प्रा ज्ञ ऐ क प्र श स्य ते ॥६५॥ क से का र ण ले व ड कु
ली न को संग द या सा धु ज न ह रू ग र्छ न य स्ता मा नि स्य हि ले प नी मा रू मा प नी अ त्य मा प नी वि ड व ल य
दे न ॥६६॥ प रि ड त ह रू छे उ स भ ग शो ऊं छ न् मूर्ख छे उ स भ दो षे मा न् ऊं छ त स्का र ण मूर्ख ह जा र
भं डा रू क जा न्या बु धि व न्त क न का म ला या प छि राजा क न ति न गु ण ऊं छ य श ऊं छ स्व र्ग प्रा प्ति ऊं छ ध न
प नी डे र मि ल्छ ॥६७॥ मूर्खे नि यो ज्य मा ने तु च यो दो षा म ही म ते ॥ अ य श श्चार्थ ना श च न र के प त नं क र वी ॥
मूर्ख लाई का म ला या प छि ति न् क र ऊं छ अ य ज स ध न को ना श न र क मा प नी अ व स्य प र्छ ॥६८॥ त स्मा

॥ वाक ॥

॥ ८ ॥

इभूमीश्वरो नित्यं धर्मकामार्थसिद्धयेद्गुणवन्ननियो ज्येन गुणाहीनविवर्जयेत् ॥ ६९ ॥ तस्कारणराजाले
धर्मकामधनवडाउन्यानिमित्रगुणान्यामानिस्त्राईकामलाउनुगुणानभयोकालाईवर्जितगर्ज ॥ ६९ ॥
यद्किंचिद्कुरुते भृत्यश्रमं वा यदि वा शुभं ॥ तेन संवर्द्धते राजा सुकृतेऽकृते रयी ॥ ७० ॥ भृत्यभक्तुवा
करलेयकिंचिद्वापपुण्यगरोक्षपनीगुणवन्नकनकामलायायछीतसेलेराजालाईयापपुण्यगत्या
पनीलक्ष्मीकोवृद्धिगरिदिह्नु ॥ ७० ॥ यथा हेमपरिक्षेततापरादनछेदने ॥ यथायुरुषमयेवंकुलशी
लेनकर्मना ॥ ७१ ॥ जज्ञोगरीसुनकोपरिदृष्टा योलीकादीहानिहेह्नुतसेगरामनुष्यलाईपनीकु
लशीललेपरिदृष्टागर्नुथाहापागिह्नु ॥ ७१ ॥ ज्ञातव्याप्रेक्षनेभृत्यावांघवाथसनाग्मे ॥ आपतकालेस
थामित्रंभार्याचविवक्षयेद् ॥ ७२ ॥ केहीकामलाईकनचाकरकोपरिदृष्टागरिजानू ॥ आपुलाईकुखप
यामादाजुभाईचिहिह्नु ॥ आपद्पदांमा मित्रकाथाहूऊछस्त्रीविचारधनसुकियायछीजानिह्नु
॥ ७२ ॥ भृत्याककुविधाज्ञेयाउन्नमाधममध्यमा ॥ त्वनियोज्यायथायोग्यंनिविद्येष्टेवकर्मसू ॥ ७३ ॥ वा

॥ राम ॥

॥ ८ ॥

कर भन्याको ठेरे प्रकार का ऊँछ उन्नम माझ धरिया तिज सा लाई त हो काम विचार गरी लाउनु ॥ ७३ ॥ आ
लस्य मूर्ख रं कुरं लब्ध व्यश निनं शठ ॥ असंतुष्ट म भक्तं च त्यज्यद् भृत्य न राधिय ॥ ७४ ॥ वक्रत अरु सी
छिबरे कोधी लोभी अला सी लोभी अहायाको न मान्या व्यशनी धूर्त असंतोषी सेवा न गन्या य सा ल
ई वा कर न रा वनु ॥ ७४ ॥ तेजे त्यामी न मत्पुर्ण मत्पुर्ण कृप नं त्यजेत ॥ कृपणा देवी से वज्ञ सुस्मा च कृ
त नाशनं ॥ ७५ ॥ अतिरि सहा अतिकृपनी एसा स्वा मिक न छोदनु कृपनी भडा पनी गन्या कोर न गन्या
को था हान या उ न्याये से भदा पनी गन्या मिहिन दु मा घो ला उ न्या लाई छोदनु ॥ ७५ ॥ वा मा भार्या सुतो
मूर्ख प्रख को वाग् विचार क निस्नि हो बंधु वर्ग श्रत्ये ज्ये दस्य महद् सख ॥ ७६ ॥ अहाया को ऊरो छोरे न्य
के थोक गन्या स्वास्नि मूर्ख छोरा कुरा को विचार न गन्या वा कर दो ज्यु भाई भया पनी प्रीती न भया को
यती थोक लाई छो आ वे दो दोष ऊँछ ॥ ७६ ॥ न कस्य चिद् कस्य चिद् मित्रं न कचित् कस्य शिद् प्रिय ॥
कारणा देव जायंते मित्राणि रिव वस्तथा ॥ ७७ ॥ कसे को को ही मित्र पनी छे न कसे को ही पियारे पनी

चाक
९

छैन कारणी ले मित्र ऊँछ कारणी सत्र ऊँछ ७७ कार्या थी भजते लोक न लोक परमार्थ का वत्स क्षीर दूध
 दूध परित्यजति मातरं ७८ आक्रा काम मानि मित्र सेवा गर्ह न परमार्थ का निमित्त को ही गदे न न वा घोष
 नो हृद सकि या यक्षी आक्रा आमालाई छोदछ ७८ ऊँचो निनो निन्द्रा अत्रि पतस्य ऊँतोर ती ॥ कृत सो
 ख्यं दरिद्रस्य कुर्जनस्य कृत क्षमा ७९ जुवा विवशन गर्ने लाई निन्द्रा ऊँदे न असंतोषी लाई प्रीति ऊँदे न द
 रिद्र लाई सुख ऊँदे न कुर्जन लाई क्षमा ऊँदे न ७९ तस्करस्य कृतो मान्यं कुर्जनस्य कृत क्षमा ॥ वेस्या
 स्त्रीनां कृत स्नेहो कृत सत्वं च कामिनां ८० चोर लाई मान ऊँदे न कुर्जन को क्षमा ऊँदे न वेस्या स्त्री को प्र
 ति ऊँदे न छिनार को सत्य ऊँदे न ८० कुर्वलस्य वलोर जा वालानां रोदनं बलं ॥ वलं मूर्खस्य मो न त्वं वो
 रणां म नृ तं वलं ८१ निर्वलिया को वल रा जा हो वालव को वल रुनी वल हो मूर्ख को न बोली रहनु
 वल हो चोर को जु थो वोल नु वल हो ८१ अनाथानां दरिद्राणां बाल वृद्ध न पथि रणां ॥ अन्याय परिभू
 तानां सर्वे खां पार्थिवी गती ८१ अनाथ को दरिद्र को बाल क को रुख को रुत पथी को अन्याय यन्या

राम
९

को एक राजा मानू गती अर्को कोई छैन न॥ ८२॥ अधितस्यार्थहीनस्य शत्रु भिन्नासितस्य बहदये शोकदग्ध
स्य मुहुर्दृष्टन मो वरु॥ ८३॥ आतुरि रोगी को निर्वनी को शत्रु को दरले युक्त भै रहा को हृदय मा शोकले
दृष्टा को मनुष्य को औ वरु सज्जन को दर्शन भया संतोष ऊँछ॥ ८३॥ आतुरे व्यशने प्राप्ते दुर्भिक्षे श
त्रु विग्रहे॥ राजदारे स्मसाने वायनिष्ठ तिस बांधवा॥ ८४॥ रोग भया मा को हो वडी आपदू यथा मा शत्रु सित
जगदा यथा मा राजा का द्वार मा स्मशान जाडा मा जांत्या बांधव तसे लाई भन्नु अधी पक्षी को क्या हो ८४॥ भा
व सुद्धी मनुष्याणां ज्ञानं सर्व कर्म सु॥ भावे ननु म्विता कांता भावे ननु हितानना॥ ८५॥ मानि सुलाई ज्या
सुके काम मा भाव ना जलोग्यो तस्ते भाव सुद्धि ऊँछ भाव ने मा पाप पुत्य ऊँछ स्त्री कन आलिंगन भि
ने भाव ले गरिछ छो रिको रुच ना काष माली नु भिने भाव ले गरिछ॥ ८५॥ न देव विशते काहे पाषाणे न
च मृन्मये॥ भावे छु विद्यते देव तस्मा भावो महोतरं॥ ८६॥ काठ मा रुग मा माटी मा मूर्ती मा देवता छैन जा
हा भाव ना गयो वा हा देवता ऊँछ सर्वे देवी वडी भन्नु भाव ने छ॥ ८६॥ शिष्या ना देवता चार्थ ज्ञान माना

॥ वाक ॥

॥ १० ॥

सर्वदेवता देवतां योषितां भर्ता ब्राह्मणो जनदेवता ॥ ६७ ॥ विप्रं पश्य यथावही माचार्यं पश्य देवता ॥ पृथिव्यं यथा
थामाता मित्रं पश्य यथा सुतं ॥ ६८ ॥ शिष्यको देवता गुरुहो गुरुको देवता ज्ञानहो स्त्रीको देवता पुरुषः सर्वको
देवता ब्राह्मणहो ॥ ६९ ॥ ब्राह्मणालाई आगाज लो देवनु गुरुलाई देवता ज लो देवनु आमा लाई पृथी ज लो
देवनु मित्रे लाई छोरा ज लो देवनु छोरा लाई मित्र ज लो देवनु ॥ ७० ॥ गुरु रग्नि दीजाती नां वरणां नां ब्राह्म
णो गुरु पति रेक गुरु स्त्री नां सर्वस्या भ्यागतो गुरु ॥ ७१ ॥ ब्राह्मण का गुरु अग्नि वारै वरणां का गुरु ब्राह्मण
स्त्री को गुरु गुरु वः सर्वको अतिथि ॥ ७२ ॥ उत्तमस्यापि वरं स्थनी चोपी गुरु मागत ॥ पूजनी यो य
थान्यायः सर्वस्या भ्यागतो गुरु ॥ ७३ ॥ उत्तम का घर मा नीज जाती अभ्यागत आया यथा योग्य पूजा ग
र्नु सर्वको अपूर्वी आया गुरु ज लो हो ॥ ७४ ॥ देवता पूजयेद् भक्त्या भक्त्या दानेन पूजयेद् ॥ शूद्र पूजो
पचारैः शा विप्रं प्रणति वदनाद् ॥ ७५ ॥ देवता कन भक्ति भावना गरी कन पूजा गर्नु वाकेर कन केही
दी संतोष गर्नु उपकार गरी शूद्र को सनमान गर्नु ब्राह्मणालाई उंद वद् प्रणाम गरी संतोष गर्नु

॥ राम ॥

॥ १० ॥

॥१॥ धर्मस्य मूलराजानं लपो मूलं च ब्राह्मणं ॥ ब्राह्मणाय नमः पूज्यं ते तन् धर्मसनातन ॥ १२ ॥ राजा का मूल
धर्म ऊनः तपका मूल ब्राह्मण ऊनः तत्कारण जसंथा उ मा ब्राह्मण को पूजा ऊनः ताहा सर्वशय मि ऊ
ऊन ॥ १३ ॥ आचार फल ते धर्म आचार फल ते धनं ॥ आचार फल मा प्रीती लावा रो ह त्यल क्षणां ॥ १४ ॥
आचार देवी धर्म ऊनः आचार देवी धन ऊनः आचार गन्या सर्वकार्य फल ऊनः आचार ले अल क्षण
पनी नाश ऊनः ॥ १५ ॥ भोज्यं भोजन शक्ति श्रुति शक्ति वल स्त्रिय ॥ विभवे दान शक्ती श्रुता ल्यस्य तपस
फल ॥ १६ ॥ खाने ऊन मा खानू शकनु सुन्दरी सीत भोग पनी गर्नु शकनु सम्यन्त्रि भेक न दान गर्नु पनी
सकनु इति स्तानू तपस्या ले ऊन देन ॥ १७ ॥ बाले वेव वरे धर्म सनित्यं खलु जिवितं ॥ फलानां मपि यद्वा
नां सा स्वतं पतनं भवेत् ॥ १८ ॥ बाले वे मा धर्म जीवतु भने को अनित्य छ भरे भो लि के ले म न छ था हा
छे फल पनी पाक्या पछि श्रवण पछि तस्ते जीवतु भनी जानू ॥ १९ ॥ सदे भस्य ह तो धर्म को धे नैव
ह त त प ॥ अटु स्य ह तं ज्ञानं प्रमादेन ह तं श्रुतं ॥ २० ॥ दे भी को त प व्यर्थ धर्म पनी व्यर्थ को धी को त प व्य

॥ वाक ॥

॥ ११ ॥

धृष्ट विप्र न कुन्या को ज्ञान व्यर्थ प्रसाद ले पश्या को वेद व्यर्थ ॥ ८६ ॥ अदीप्य गौहतो होम होता भुक्ती र
साक्षी नी ॥ उपजि व्याहता के न्यासार्थ पाक होता किया ॥ ८७ ॥ अग्नि प्रजो लिते न भे होम गत्या को व्यर्थ सा
क्षि न रावी वा या को व्यर्थ धन मार वर छे उं ली क न क न्या दान दिया को व्यर्थ आर्पे नि मित्र मात्र पाक ग
त्या को व्यर्थ ॥ ८८ ॥ दारिद्र्या धि दुःखानी बांधवा वेशना निव ॥ अदातु फल मेतानी तस्मात् दानं विशिष्य
ते ॥ ८९ ॥ दारिद्र्य भया को रोगी भया को वंधन भया को केही वेशन भया को एति थोक अधि ला जन्म मा दा
न न गत्या को हो तस्कार एा दान गदै रहन ॥ ९० ॥ पुल ई व धाने छ पुत्रि का ई व जंतु पु ॥ ता द शा स्ते मनु
ष्ये पु ये च धर्म व हि कृता ॥ ९१ ॥ धान को प हा ज स्ता जै तु मा हां का धि चि मि ला ज स्ता धर्म न भया का
मनुष्य त स्ते ऊ छ ॥ ९२ ॥ त्यज्ये दुर्जन संसर्ग भज साधू समा गम ॥ कुरु पुन्य म हो रा त्रं स्मरं नित्यं मनित्य
तां ॥ ९०० ॥ दुर्जन का संसर्ग छो डी साधू को संग गर नित्य ज स्तो संसार अनित्य डी भनी रात दिन पुन्य
गर भनी चानक ऋषी श्रवले शिष्य ह रु लाई भदा भया ॥ ९०० ॥ इति श्री चान के सार संग्रहे प्रथम स
का

॥ राम ॥

॥ ११ ॥

तर्क समाप्ति ॥ १ ॥ शास्त्रार्थ बहुखाविदान् नरेन्द्रो निनिबुद्धवा ॥ वेदार्थबुद्धवा विप्राश्चर्ये चारबुद्धवा
॥ १ ॥ पण्डित हरुः शास्त्रकोश्यावाले हे छन्द वेडका आखाले वांछना हे छन्द अरु मनुष्यवर्मबुद्धाले हे छन्द
॥ १ ॥ रात्रिधर्मिनी धर्मिष्ठ पापे पाप समाप्ति ॥ राजानं उर्निवृत्तिस्था यथा राजास्तथा प्रजा ॥ २ ॥ राजा
धर्मिष्ठ भया प्रजापनी धर्मात्मा ऊँछ राजायापि भया प्रजापनी पापी ऊँछ न पाप पुराण वरी वरग
न्या भया प्रजापनी तस्ते ऊँछ राजाले गत्या जस्तो प्रजापनी तस्ते ऊँछ व ॥ २ ॥ उद्यमं साहसं धैर्यं
बलं बुद्धिं पराक्रमं ॥ षडेते यस्य निष्कंती तस्माद्देवपिसंकिते ॥ ३ ॥ साम्राज्ये न भेदेन क्रमेण न
बलेन च ॥ सर्वशत्रु सदाशत्रुघातनीयो न शधिर्पै ॥ उद्यमं भयो साहसं भयो धैर्यं भयो बलं भयो बु
द्धिं भयो पराक्रमं भयो एति छ गुण जस्य छ उँछ न तस्मन्मनुष्यदेवी देवपनी दरा उँछ न ॥ ४ ॥ आ
पस्तले सपथगरी के ही फेर फेर गरी पराक्रम गरी बलले एतीथो कले गरी कनयनी सर्वथा श
त्रुको नाश गरी ॥ ४ ॥ पात्रे त्वागी गुरोरागी भोगे परिजने शर ॥ शास्त्रे वीधारे शोयो अनृतपते पंच

॥राम॥

॥१२॥

लक्षणा ॥ ५ ॥ पात्र को विचार गरी दान गन्या गुण प्रीती गन्या आ पूरा परिवार संग भोग गन्या पराई का
अभी प्राय बुझ न्या सं प्राप्त मा भू से भै युद्ध गन्या ई पात्र थी क गुण भया क लाई प्र भू भंनु ॥ ५ ॥ उ न
म प्र नि पाते न भू से भै दे न यो ज ये न ॥ लुब्ध मर्थ प्रदाने न सम नु ल्य परा क्र मे ॥ ६ ॥ व ड लाई प्रे शा म ग
री हात लि नू भू र क न फोर फार गरी लोभिक न धन दी सम लाई व से व र परा क्र म गरी हात लि
नू ६ नाम छि ई परे वि आ वि आ छि ई प स्थ र ॥ गृहे क र्म इ वां गानी पर भा व च ल क्ष ये न ॥ ७ ॥ आ
फु छि ई अ र्क लाई न कह न पराई को छि ई गो व्य गरी आ फु ले व जी रा व नू आ फु अं ग क छु वा
ले लु का या ज स्तो र क्ष्या गर्नु पराई को भा व व जी रा व नू ॥ ७ ॥ मन सा चिंत ये ई कार्य व च साने प्र का श
स ये न ॥ मंत्र लक्षणा गुण आ का र्थ सिद्धि श्र जा ये ते न ॥ ८ ॥ मन ले चि ता या को कार्य व च न ले प्र का
श न गर्नु मंत्र ज स्तो गु प्र गरी का र्थ ग न्या लाई सिद्ध ई छ ॥ ८ ॥ उ प कार गृ ही ते न शत्रु णां शत्रु मु
करे त ॥ पा द ल गे न कर स्थे न कंठ के ने व कंठ कं ॥ ९ ॥ उ प कार गरी शत्रु लाई हात लि नू अ र्क शत्रु ला

॥राम॥

॥१२॥

ईकामगरीदिनुपाउमाभिज्याकाकाठाकाठेलेकिआफलनुतलौ॥८॥बहेदमित्रंस्कंधेनयावत्का
लविषय्यय॥नथेवमागतेकालेभिआत्घतमिवाश्मभि॥९०॥आप्तविषन्निमाहकाधमाहलीकन
यनीशत्रुकोकामगरीदिनुकाजकामलाईचछाउनुजबकालआईप्राप्तभयोतवभरिगाग्रीपाशिभ
रिगाग्रीगुंगामाआफलफोआऊगर्नु॥९०॥हेजिहूकडुकस्त्रिहोमधुरंकिन्नभावसे॥मधुरंवदकल्या
णिलोकोयंमधुरप्रिय॥९१॥हेजुहूतिगोपिरोनिकोमान्दछन्मधुरक्यानखादेनसन्ननिकोनबोल
मिथेकुरोबोलहेकल्याणिलोकंसर्वेमुधुरोनिकोमान्दछन्॥९१॥जिहूगेवशतेलक्ष्मीजिहूगेमित्र
वांधवा॥जिहूगेवन्धनंवापीजिहूगेमरणंध्रुवं॥९२॥जिहूकाटुप्यामाहलक्ष्मीवशछिन्मित्रप
नीभाईपनीमरणपनीनिश्चयजिभ्रामाछन्॥९२॥प्रियवाक्यप्रदानेनसर्वंतुष्यंतिजंतव॥तस्मातदे
ववक्तव्यंवचनंकिंदरिद्रता॥९३॥मिथोकुरीबोल्यापदिःसर्वेप्रशन्नजिहूछन्तत्कारणपियागेलान्या
कुरोबोलवचनमाकेनदरिद्रजिहू॥९३॥अग्निदोगरदशैवशस्त्रपाणीधनापहा॥क्षत्रदारपहा

वाक
१३

रीच घडे ते आत नायरा १४ घरमा आगोशल काई दिन्हा विष छु बाई दिन्हा अर्काको प्राण लिने अर्का
की स्वालिहने विनाहन्ती रति आत नाई भन्नु १४ आत नाई नमायांती मपि वेदान पारग ॥ जिघांश
तं जिघांशी यान ते न ब्रह्म हा भवेत् १५ एता आत नायरा कन चतु वेद पार भयाको ब्राह्मरा भयाप
नी तानु माया यनी ब्रह्म हत्या लादेन १५ राखं पालयते नित्यं सत्य धर्म परायरा ॥ निजित्य परसे न्या
नी पति धर्मे न पालयेत् १६ राजाले सदा सत्य गर्दे राज्य पालना गर्नु शक्र जिती कन धर्म ले प्रजा पा
लना गर्नु १६ पुष्यं पुष्यं विचिं नूया मूल छेड न करयेत् ॥ माहाकार इवांगानी यथा जानाति सार
ता १७ राजाले मालिनी जस्तो कुं नूक सो भने बाहि दो फुले ति पीलि नूको न उषेल नूत ले राजा
ले प्रजा रावी द शङ्क गर्नु १७ अहि मित्र मुदा शीन मध्य स्थ स्थ विरो गुरु ॥ योन नु ध्यति मदात्मा स
ब सर्व वन स्यती १८ यो शत्रु यो मित्र यो मित्रासी यो मध्यम यो जेष्ठ यो गुरु भनी व्यवहार गर्नु श
त्रु मित्र को विचार न गर्नु नाश छे १८ अनाय व्यय कर्ता व अनर्थ कलह प्रिय ॥ आनुरे सर्व भ

राम
१३

क्षीन व रसी घुंवि नश्यती ॥ १९ ॥ आन्यानी नहे रिः चर्चगर्ने राजान भयादेश सा ऊगदागर्ने रोग भयाका
बेला मास वै धोक वा न्या वा देना सिंह ॥ १९ ॥ ककाल का निमिना ती को देश क व्यागम ॥ कस्याहं क
च भेश की रिति विना मुकुर्मुकु ॥ २० ॥ काल भने की क्या हो मित्र भने की क्या हो देश भन्या की क्या हो
वर्च भन्या की क्या हो लाभ भन्या की क्या हो मको कुं मेरी शक्ती सामर्थ क्या हो भनी वारं वार चीत नागर्ज
॥ २० ॥ सिंह देकै व का देकै शिष्य व त्वारि कुर्कु यत् ॥ वाय सा नृ पंच शिष्य च व दू भुन स्त्रिणि ग द भा
त ॥ २१ ॥ सिंह को एक १ गुणालि नू व कुला को १ गुणालि नू कुश को चार गुणालि नू काग को पांच गु
णालि नू कुकु को छ गुणालि नू गदाहा को तिन गुणालि नू ॥ २१ ॥ प्रभूत कार्य मलयं वा योन रगर्ज सिद्ध
ति ॥ सर्वारं भेवुत ट कार्य सिंह देकै विधीयते ॥ २२ ॥ जो के ही काम गन्या पनी सिद्ध नगरि न हो ड नू
योयक गुणालि सिंह देउ लि नू ॥ २२ ॥ ईद्रिया नी तुशं तुष्ट व क व द पंडि ती नर ॥ कार्य कालो प य न्ना
नी सर्व कार्य शि शा रु येत् ॥ २३ ॥ व कुला जे आ पूरा कार्य सिद्ध न हो जाल शांत भै रहत काज श्रो

चौक
१४

सरपन्थापदि सर्वे काजकोः शाधनागर्तुः योवकुलाकोयकगुणालिनु २३ प्रागुस्थानं च उद्धव संवि
भावन वं धु ॥ त्रियमाक्रम्य भूजीव शिष्य च तारिक कृतात् २४ व्याहने उधुनु शत्रु सीत उद्ध ग
र्तुः आम्नादा जु भाई वरीवर देव नुः स्त्री के टा के टि वा दु ला गरी खानुः यो चार गुण कृषु रा दे वी सि
कनु २४ गुठ मै धु न धू न त काले चार य संग हं ॥ अ प्र मा दी मु त्तं च पंच सि ध्यं च वा य सात् २५
मै धु न गु प्र ग र्तुः वे ला हे री सं ग ह ग र्तुः दा जु भाई संग ह ग र्तुः धू न्तं ऊ नू अ हं कार न ग र्तुः ए ति पां च गु णा
का ग कालि नू २५ व हू शी चाल्य शं तु छः सु नि द शी धु वे न न ॥ स्वा मि भ क्त श्व शूर श्व व डे ने खान तो
गु णा २६ भ यो टि रे खानू न भ या सं तो य मां न्या वा दे सु तु नू वा दे उ नू स्वा मी भ क्त ऊ नू शुरे ऊ नू
ए ति छ गु णा कृ कृ की लि नू २६ अ भि श्रा नं भ हे दू भा रं शी तो धं च ने विं द ती ॥ सु सं तु छ भ वे दू नि
त्प नृ णि शि ध्यं च ग द् भा दू २७ न वि साई भा रि वो के न्या वि सो ता तो न मा न्या थो रे ले भ या प नी सं
तो य मा न्या ए ति थो क गु णो ग डा हा को लि नू २७ विं श ति ता गु णा प्रो क्त य सु क र्प्या दू वि च क्ष रा

राम
१४

॥ सजेष्य निरिपुं सर्वान जेयस्य भविष्यति ॥ २८ ॥ एति २० गुणज समनुष्यले लिखा का छन यो विचक्षु
न मनुष्यले शर्वेश क के नाश गद्येन ॥ २८ ॥ अमूर्खो यो मनुष्या नां म न्यशत प्रवेत सां ॥ परस्य रोपकार
णा पुसां भवती विग्रह ॥ २९ ॥ ज्ञानी मनुष्यले आ फ्राम नका डख आ फे मन मा माई परस्य रुउ पकार
गरी दिंदु न सा पुजन हं रुग दा गदेन ॥ २९ ॥ यको दशपृथक् गी वा ये वरं ती महा शावे ॥ असा धिता वि
नस्यंती भैरु डा इव पं दिने ॥ ३० ॥ उई कपाल ये कयेत भया को भैरु दा पं धी स मुद्र मा च द न रुग दा
परि गयो र उवै नाश भये द न स र्थ आ फ्र सीत रुग डा न गर्नु ॥ ३० ॥ व्यसने शति कु वीत ये न के ना ध
पि संहति ॥ ऋक्ष वानर गो पुं दे पु रा डा सर थी य था ॥ ३१ ॥ विपत्ती यथा पछि साना जान छे उं पनी भ
जना गरी डख तानु पछि श्री राम चन्द्र कन गा हो यदा वानर भालु साथ ली कन लं का सा ध्या था ॥ ३१ ॥
उच्छरं शा गरं तीर्न समग्रं वान लं वलं ॥ अज भूत पुर्व रामे न सेतु वंधश्च सा गरे ॥ ३२ ॥ दे रे भया पछि
साना ले पनी ठु लो का ज ग द न वा रा र सर्वे वी तो ली श्री राम चन्द्र ले सेतु वा ध्या था ॥ ३२ ॥ पु यं शत

वाक

१५

वयं पंचो विरोधं च परस्परं ॥ परैराक्रम्यमाने तु वयं पंच त्रशतं ३३ अधिष्टिरराजाले भाई दुर्ग्यो
धनछे उ भछन हे दुर्ग्यो धन ति मि से १०० भाई हो हा मि ह रूपान्व भाई विरोध गरीर हा हो अर्का
सीत विरोध पया पछि हा मि पान्व ति मि से य भाई मिली रुई ३३ दित्वा भित्वा च म मानी क ता वैर
म सातक ॥ ज्ञातये स्मता यांती य पर पर ये वव ३४ आक्रादा ज्य भाई संग जुग दा ग हंत पनी निदान
आफ्र आफ्र ऊँ छ विरा नु विरा नै ऊँ छ ३४ चिंता ज्वरो मनुष्यानां मथानं मेधुनं ज्वरा ॥ अंसी भाग्य
ज्वरा स्त्रीणां वस्त्राणां मातपो ज्वरा ३५ मनुष्यको जोर चिंता हो घोडको ज्वर मेधुन हो स्त्रीको जोर
सो भाग्य हो वस्त्रको ज्वर घा म हो ३५ अधा जरा मनुष्यानां मन धावा जिणां ज्वरा ॥ अं मेधुन ज्वरा
स्त्रीणां मथानं मेधुनं ज्वरा ३६ ठेरे वाये हिडन्या मनुष्य वादे उ थो ऊँ छ नहि दा या घोडो वादे उ थो
ऊँ छ मेधुन नग्या स्त्री वादे उ थो ऊँ छ ३६ कक्षा वृत्ति पराधीन कक्षा वा सो निराश्रया ॥ भूतपु
वधि संयुक्त सर्व कक्षा दरिद्रता ३७ अर्का का अधीन भै रहनु पया पछि कथिन हो आश्रय

राम

१८

नकुन्या मनुष्य पनी कछ हो अघी महाधनी पछी कंगाल भयाको सो पनी बडोकछ हो ३७ अर्थि
तो व्याधितो मूर्ख प्रवासी परसेवक ॥ जीवतो पी मृतं यन्व पचैते दुःख भागिन ३८ सदाधनतुल्य
उनाको सुर्तागर्भ सदाशेगी सदा परदेशी मूर्ख अर्कको नाकरी एति पांच जिउदा छत पनी मयातुल्य
ऊन अभागीछ ३९ यो यत्र नित्य मायांती अक्तं वापी दिने दिने ॥ सतत्र लघुतायांती यदि सकसमो
नर ३९ अर्कका घर मासदा जानू खानू गया पछि ईन्दु तुल्य भयानी हलका ऊँछ ३९ परान्न पट्ट
वस्त्रं वधर पालं परस्यन् ॥ परश्यन् गृहे वा शशक स्यापि श्रियं हरेत् ४० अर्कको अन्न खान्या अर्क
की वस्त्र लाउने अर्ककी स्त्री मनगर्ने अर्ककी सदा जान्या ईन्दु तुल्य भया पछी पनी हलका ऊँछ ॥
४० ॥ असो अयो निद्ध नो विद्वानसो अयो पुत्रवानर ॥ असो अयो विधवानारो पुत्रपोत्रप्रतिस्थित ४१
ज्ञानी साधु कै गाल भया पनी शोक छैन छोरा भयाका मनुष्य लाई पनी शोक छैन छोरा नानी भ
याका विधवा स्त्री को पनी शोक छैन ४१ पुज्ये ते विधवा सर्वे नशरी एति दीहीनां ॥ चञ्जलो पीनश

शोक
१६

श्रेष्ठ यस्यास्ती विपुलं धनं ॥ ४२ ॥ सर्वे लोक लेधनू को इच्छा गर्ह धन लाई नै मान गर्ह मनुष्य लाई को हि
मान गर्ह न धन भया वा रात्राल कन पनी मान गर्ह न ४२ धन माहु पर धर्म धनै सर्व प्रति स्थितं ॥ जीव
नि धनी नो लोके मृता यत्न धनान् ४३ श्रेष्ठ धर्म भनू धन हो धन जो छ धनै ले प्रति सा ऊँ छ त स ध
धनी मनुष्य जिउ दो हो निर्धनी मनुष्य मर्या तुल्य हो ४३ अति सम्य द मा पनी भेत य पतना इ भ
यं ॥ अत्युच्च शिष्य रू धं सत्यं वज्रेन पातीत ४४ अति धन भया पछी घसला मनी दण्ड उनु कसी
भने अंगली पर्वत कन वज्र ले घसा उँ छ न ४४ को भक्ष्यो भक्ष को नित्यं कसुं श्रुवा निवरे गिनी
॥ यस्य भार्या तु संतुष्टा क्व च तस्य तत्सर्वं गृहे ४५ सर्व भक्षी कन अभिष्ट का हां छ सदा ऐगी क
न सुख का हां छ जस्की स्त्री असंतोषी छ उस्का का हां सुख ऊँ छ ४५ सर्व पर वशं दुखं सर्व मा
मा वशं शुभं ॥ एतद् विद्या समाशेन लक्षणां सुखं दुखयो ४६ अभिष्ट स मय मायेती गने को शु
ख छ अरेगी सदा सुख ऊँ छ स्त्री वश पऊ न्या का घर मा सदा सुख ऊँ छ ४६ सुख स्थानं तं सुखं

एम
१६

उख स्यातं तं सुखं ॥ सुख उख मनुष्यां च कवदू परिवर्तते ॥ ४७ ॥ अर्काको वश पर्जु उख हो आ फ्रा
वश सर्वे छ भने सुष हो सुख उख को लक्षणायेती हो ४७ वक्र भी पूर्व संघाटे रन्योन्यं पशु वृत्ति भी
॥ छादयते गुणा सर्वे मे धी रिव दिवा कर ४८ पूर्व सर्वे वातुला भया का था उमा गुणी क १ को प्रयो
जन छैन ज स्ने श्री सूर्य कन बादल ले छो दा मे छे प छन ४९ अ सता सह संगे न को न यां ती ध सांग
ती ॥ पयो पी शी दिनी ह स्ने मध्य मित्य विधी यते ५० ऊ जात सीत संगत भया पछी भलो मा नि स पनी
ऊ जात बोला उ छ सु लि नी ले दुद बोकी ल्या या पनी रक्ती बोला उ छ ५० अस दू सं प क दो षे न अध
मा या ती श्राध व ॥ मार्गे छी निर दो षे न समो पी विश मा यते ५१ अ सा धु सीत संग भया पछी सा धु य
नी अ सा धु ऊ छ अंधार ले छो व्या प छि स्म बाये यनी वि स्म दे वी छ ५१ उन्न मे सह संगे न को न यां
नि स मु न नी ॥ मु छी नि नानी धार्जे ने ग्र थि ने ऊ सु मे सह ५२ भला सीत संगत भया पछी मन्दो यनी भ
लो ऊ छ क सो भन्या फुल शी त गा सिया घाश पनी सीर मार ह छ ५२ किं करि ध्यति सं प क स्व भा वो ड

वाक
१७

रतिकमः पस्याम्रफलमध्यस्थकरवायोनात्मनांगत ५३ भलाकोसंगत भयालेक्याङ्गं स्वभावदुर्दे
नः आपभिन्नकोकोइलट्टरैङ्गं ५३ सर्करावसुवर्धनमध्ये निम्बप्रतिस्थित ॥ मधुकीरसमावृष्टा नि
म्बकिंमधुरायते ५४ सघरमानिम्बरोषनुः उदरः महसदादुर्गः तैयनीतिनैङ्गं तसर्थः स्वभावफि
देन ५४ पुलकेषु च याविद्या परहस्तेषु यद्धनं ॥ कार्यकालोऽप्यं नानी न साविद्या न दधनं ॥ ५५ ॥
पुष्ककमालेष्वाकोऽविद्याः अर्ककाहानमापयाकोधनः काजययाकाघरीमाश्राप्ताकाजमालाग्दे
न ५५ दुरस्यानिवः मित्राणि निस्त्रिहा निवबोधवा ॥ किंप्रयोजनकर्तव्यं मर्थितो निस्फुलानिव ५६
त्रिहनभयाकोदाजुः भाई ताधाकोमित्रः क्वाप्रयोजनछः काममानलाग्याको निस्फुलहो ५६ अत
व्याङ्गमपुष्पानिः दुरस्यानिहिवांधवा ॥ कांतावालिष्यरूपाणि यकालो नोपनिश्चती ५७ वनकाफु
लटाठाकाभाई क्वांप्रयोजनछः यनिकाजसापाउदेन मित्रामालेष्वाजस्तोहो ५७ प्रशावचनहीन

राम
१७

शु. कर्महीन. लु. यो. नर. ॥ निरर्थ. चेतना. तस्य. भस्म. न्या. कुत. यो. यथा. ५८ अज्ञानि. वचन. हीन. कर्म. ही.
न. मनुष्य. का. का. र्थ. यथ. हो. क. शो. भ. न्या. घा. नि. मा. धा. हो. म. ग. न्या. ज. स्तो. ५८ छा. ग. जु. ह. नृ. वी. श्रा. ह. दं. य.
त्यो. क. ल. ह. ल. था. ॥ च. त्वा. रो. न. स्फ. लो. या. ती. प्र. भा. ते. मे. घ. डं. वरं. ५९ वी. का. की. यु. ह. नृ. वी. की. श्रा. ह. जो. ह. पो. ह.
को. क. ल. ह. वे. ह. न. को. मे. घ. ६० थो. क. य. थ. हो. ई. जा. ह. नृ. ५९ नि. स्फ. ला. कृ. प. नी. शे. वा. नि. स्फ. ला. रि. तु. वा. तु.
रे. ॥ दो. ष. शं. यु. क्त. शी. ल. स्य. भ्र. ति. वि. प्र. ह. य. नि. स्फ. ला. ६० कृ. प. नी. को. वा. क. शं. रो. गी. को. मे. धु. न. दो. षी. वा. ल.
ण. की. वि. श्रा. य. ती. को. वे. थ. जा. ह. नृ. ६० वर. य. त. कु. ल. जा. प्रा. शो. वि. रु. धा. म. पि. क. न्य. कां. ॥ ह. प. स्ति. नी. व. नी.
व. स्य. वे. वा. ल. श. ह. श. कु. ले. ६१ शो. नी. ले. ह. प. न. भ. मा. प. नी. व. डा. कु. ल. की. कं. न्या. वि. वा. ह. ग. र्ज. सुं. द. रि. भ. या.
प. नी. नी. व. कु. ल. की. कं. न्या. वि. वा. ह. न. ग. र्ज. ६१ वि. स्वा. द. य. मृ. तं. ग्रा. ह. म. मे. ध्या. द. पि. कां. व. न. ॥ नी. वा. द. यु.
न. मां. वि. श्रा. त्वा. र. त्वां. ड. स्फ. ला. द. पी. ६२ वि. ष. मा. प. नी. अ. मृ. त. जि. की. लि. नु. जो. ग्य. कृ. रा. वा. ल. व. को.
प. नी. मां. नू. नी. व. कु. ल. ह. डं. प. नी. उ. त्त. म. वि. श्रा. लि. नू. सा. ना. जा. न. भ. या. प. नी. स्त्री. र. त्वा. ता. लि. नू. ६२

श्री वाक

१८

कस्य दोष कसे नास्ती व्याभिनां कीन थी दिन ॥ केन न व्यशनं प्राप्तेः प्रिय कस्य निरंतरं ६३ कस्य कल
मा दोष है नः गे गन ल्या ग्या को कस लाई छः ६४ न पाया को कसे छः लक्ष्मि स्थिर के स्का छ ६३ दो
षो व्यष्टिः गुणा व्यस्ति निर्गुणो वृषि जनु वृ ॥ तु कुमारस्य पद्मस्य नासो भवती सर्कस ६४ सर्व को
दोष पनी गुण पनी ऊँ छः वे स क म ल का फल का नाल मा व श्री ऊँ छः ६४ अमृतं सी तिरै वही
अमृतं सी र भोजनं ॥ अमृतं गुण वती भार्या अमृतं बाल भावितं ६५ जादा को अमृत आ गो
हो छी र यान पनी अमृत हो गुण वती स्त्री पनी अमृत हो बाल व वी लि पनी अमृत हो ६५
उर्ध्व भाया कृता वानी उर्ध्व भा श्व क्ष मी प्रभू ॥ उर्ध्व भा श्व सु हृ द नारी उर्ध्व भव वन प्रिय ६६ सं
स्कृत बोली क्ष मा वत राजा हो न की स्त्री प्रिय वे वन यति उर्ध्व भ हो ६६ नदी नां जाहू वी श्वे क्ष नारि
नां व प्रतिव्रता ॥ मनुष्या नां नृ प प्राहू देश नां यत्र निवृति ६७ नदी मा गंगा श्वे क्ष स्त्री मा पतिव्रता
श्वे क्ष मनुष्य मा राजा श्वे क्ष देश ओ ऊ वस्था को श्वे क्ष ऊँ छ ६७ उव पोत्र समा किर्न दा सी दा स स

राम

१८

मा कुला ॥ भार्या विहितं पुसां यथा रण्यस्तथा गृहं ६८ छोरा नातिक मारा क मारि एतिसंजुक्त भ
यापनी स्त्री न भया की घर वन ज सो हो ६९ सर्वे वां मे वरत्ता नां स्त्री यो रत्न मनु न मं ॥ तस्मा तदर्थ नि
रता तथा न्यक्त्या धने न किं ६९ सर्वे रत्न की भंदा दुलो स्त्री रत्न हो तसर्थ पुरुष की स्वाक्षि न भया
पदि धन की क्या प्रयोजन ६९ ऊ स्त्री हंती ऊ दुवा नी कु पुत्रे हन्यते कुलं ॥ कु मं श्री हन्यते राजा
राज्यं यो रेण हन्यते ७० ऊ स्त्री ले कुल को नाश गछ ऊ दुव पनी नाश गछ ऊ पुत्र ले कुल को नाश
कु मं श्री ले राजा को नाश गछ वोर ले राज्य को नाश गछ ७० स्त्री शां दोष सह श्री शां गु ना नी च
गुणानि च ॥ गृहाचार सुतो दयनी मर सो पति नाश ७१ स्त्री का दोष ह ६९ न गुण भने ३
ति न मान दव के के भन्या घर को रक्षा गर्नु छोरा पा उनु सत्य जानू ७१ कवय कि न पस्ये तो
कौं न भ क्षं ति वा य सा ॥ प्रसादा किं न कुर्वं ती किं न जल्पती मथ या ७२ कवी हर ले न देखा को क्या
छ का गले नखा या को क्या छ स्त्री हर ले क्या गछे न मनु जा ला ले क्या बोले न ७२ ७७ प्रयोजन भ

श्रीचाक

१८

र्यापुत्रापिंडप्रयोजनं॥हीतप्रयोजनंमित्रं॥सर्वमात्मप्रयोजनं ७३ दोरनिमित्रस्त्रीबाहिंद॥पिंड
निमित्रदोरबाहिंद॥हीतकानिमित्ररविचारकानिमित्रमित्रबाहिंद॥प्राप्तनिमित्रसर्वबाहिंद
७३ समुद्रावरणाभूमीप्राकारावरणागृहा॥नरेन्द्रावरणादेशावरिनावरणास्त्रिय ७४ स
मुद्रलेवेष्टाकोष्टपीहो॥परवाललेवेष्टाकोष्टरहो॥राजावेष्टाकोदेशहो॥सुवरित्रलेवेष्टाकोस्त्रीहो
७४ नगृहनिनवाशानीनप्राकारनरक्षका॥नवंधुनैववक्षोवासुसीलाश्रुकुलस्त्रिय ७५ घरको
परखलेरक्ष्याकुंदेन॥दाजुभाइइष्टमित्रलेपनीरक्षाकुंदेन॥शालवनस्त्रीलेमानरक्ष्यागई ७५
नदीपातयतेकूलंनारीपातयतेकूलं॥नारीनाननदीनांवस्वच्छन्दललितागती ७६ नदीलेआफुती
रकोभक्तगुंछ॥स्त्रीलेआफुजुकुलकोनाशगई॥नदीरनारीकोयेकेआफुमनुष्यदर्शगई ७६ लता
पार्श्वस्थितंवृक्षेभृत्यपार्श्वस्थितंनृप॥पार्श्वस्थंपुरुषोयोयीदेखयतीनशंसय ७७ लहराले
आफुनजिककोवृक्षसमाउंछ॥राजालेआफुनजिककोसेवकनिकीमांछ॥स्त्रीलेआफुनजिक

राम

१८

को पुरुष को इच्छा गर्छ ७७ नैव पश्यति जात्यां यका मां धी नैव पश्यती ॥ न पश्यती मदो मन्त्रो अर्थ दोष
न पश्यती ७८ जन्मे देखी कान पनी केही देव देन का मातुर ले पनी केही देव देन ७८ जिर्न मन्त्र प्र
शस्ये ते भार्या वगत जीवना ॥ राणा प्रत्यागत शूर शस्यं वगृह माभागत ७९ अन्न खाई पत्न्या को निको
वेश गया की स्त्री निको संग मदे पी घर फर्का को शूर निको अन्न घर पत्न्या को निको ७९ लक्ष्मी ल
क्षणा ही नैव कुल ही नैव सरस्वती ॥ अपात्रे रमते नारी गिरी वर्यती वाशवं ८० लक्षणा ही न भया का
था उं मालक्ष्मी ही न कुल मावस्या की सरस्वती घटिया कुल मावस्या भया का स्त्री इन्द्र ले पर्वत माले
वमा पत्न्या को पानी जस्तो वैर्थ हो ८० यस्य भार्या विरूपाक्षी कस्मिन् कलह प्रिय ॥ उत्तरा न्नरवादी न
सा जरा न जरा जरा ८१ जस्को स्त्री नरा मी छ सदा कलह छ पुरुष शीत उत्तरा न्नर जवा फदी
छ गडा गर्ने त्यो स्त्री को पुरुष बादी उर्ध्वोर्ध्व ८१ यस्य भार्या विरूपाक्षी भर्तार मनुगामि

शोक
२०

नी॥नित्यमधुरभाषीवसाश्रीयायश्रियाश्रिया ८२ जस्कोस्त्रीसुंदरिछपुरुषभनेकोमान्दछप्रीती
वचवोलाठछेःत्यस्कीपुरुषवुजेभयायनीदिनदिनतंनैराऊछ ८२ यस्यभार्यागृहेनित्य
सुनीवपरिगर्जती॥तस्यसिदन्तीगात्राणिपद्मनीवहीमे ८३ जस्कोस्त्रीपुरुषकनककुरकरा
याजैगर्दतसकीपुरुषकोसरीरगल्छहिठसेकोकमलसुक्याजैसकछ ८३ यस्यभार्यागृहेनि
त्यमानैवहीतकारिणी॥वर्द्धनैतस्यगात्राणीशुकपक्षेयथाससी ८४ जस्कास्त्रीआमालेनिको
गर्दाजैःपुरुषकननिकोगर्दतस्कोसरीरशुकपक्षकोचन्द्रमाजैवठछ ८४ किंजातेवजुभीपु
त्रेशोकसंतापकारके॥वरमेकंकुलालंवीयत्रविश्राम्यतेकुलं ८५ शोकसंतापकारकेशोकसं
तापदिन्याठेरैछोशभयालेक्याऊछकुलथामनेयकेपुत्रलेश्रेष्ठछ ८५ एकभार्यात्रियोपु
त्रादेहलिदशधेनव॥कन्याकालावसानेनननतेयास्थितीविक्रिया ८६ स्त्रीयेकछोरा३दिहलुगा

एम
२०

६१० एति कुंडे लाई कैले विमं देन ८६ यक्ष व्यावहव पुत्रा गया मे को यदि वजेत् ॥ यजेत व्याध मे धेन
नीलं वा वृष मुत्सजेत् ८७ पुरुष लेटे रें छोरा हवस भनी इच्छा गर्नु ठे रें छोरा भया पछि येक को ही ग
या जाला येक को ही अश्व मे धज जगर्ला एक को ही वृषो दू स गर्ग गर्ला जज्ञ गर्ला ८७ ये के न भुक्क वृक्षे न
दक्ष माने न वही नां दक्ष ते न दू वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ८८ मुक्का को यक वृक्ष मा आगो लाग्दा सबे
वन दछि छ न ले कुपुत्र ले कुल को नाश गर्छ ८८ ये के न पुष्य वृक्षे न त दू वने न सुगंधि नां ॥ वा स्यं ते न दू
वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ८९ वन मा येक वृक्ष सुगंध कुल कुल्या सबे वन सुगंध कु छ न ले सुपुत्र
ले कुल को प्रकाश उद्धार गर्छ ८९ यस्य पुत्र वसा भृत्या भार्या छंदानु गामिनी ॥ वि भवेष्ट पितुं सु
स्वर्ग न स्य मही न ले ९० जस्को छोरा छोरी क मा रा क मा शी वस्य मा छन् आ फ्री स्त्री वस्य छ वन पनी
छ न स्को स्वर्ग यही हो ९१ पालने पोस्ते कन वा वु भंनु जस छे उ विथा सर हं छन् त्यो मित्र हो आ फ्र
वस्य मा जो छ त्यो स्वाधी हो ९१ ये पुत्रा स्ते पितुर्वस्या स पितो यस्त पोशक ॥ तन् मित्रं यत्र विश्वासं सा

चाक

२१

भार्या। यत्र नीहती ६१ यस्य जीवती जीवती विप्रामिश्रवांधवाः सफलं जीवितं तस्य आभार्ये को
न जीवती ६२ जस्काजिउदाव्राह्मणमित्रवांधवजिउच्छन् सफलजिउनु तस्को हो आभू जिउ
ना को पालेदेन ६२ स जीवती गुणा यस्य यस्य धर्मश जीवती ॥ गुणधर्मविहीनस्य निष्फलं तस्य
जीवितं ६३ गुणधर्मनकुले मनुष्यमन्या को हो गुणधर्मकन्या मनुष्यलाइ जू दो भ
नु ६३ वाचा सरस्वति यस्य भार्या रूपवती सती ॥ लक्ष्मी त्यागवती यस्य सफलं तस्य जीवितं ॥
६४ जस्का नुख सरस्वती छ धरमा सुन्दरी स्त्री छ दानगर्ना को सा मर्थ छ तस्को जिया को सा फ
ल्य छ ६४ धर्मार्थकाममोक्षार्ण यस्य को पीन व्ययते ॥ अजागरत रशो पीनी रर्थ तस्य जीवितं ॥
धर्म अर्थकाममोक्ष एति वारथो क माये क थोक पनी न तुल्या उन्या मनुष्य जिया को निष्फल हो
६५ धर्मसत्यविहीनस्य दिनं यांति व विक्रिया ॥ स लोहकाल भश्रेण स्वयं वैद प्रजियति ६६

राम

२१

सत्यधर्मभयनरत्नो मनुष्यको आयुवर्धकं कृच्छ्रं कामिका लुगा फात्या के ना सिद्ध ६६ सुत्ररपी ग
नो वा आ दोषो वा आ गुरो र पी ॥ युक्ति यूक्तं व बो ग्या ह न व बो ग्या गुरु को र वा ॥ ६७ ॥ गण कु ने कुरा ता श
त्रु को यनी गर्नु दोष कुरा गुरु को यनी ने मानू कुरा ग्या को विचार गरी मानू ६७ अक न्न वं न क
न्न वं प्राणो कुरा गते र पी ॥ क न्न वं मे व क न्न वं प्राणो कुरा गते र पी ६८ न ग न्या काम गला मा स म्मः
प्राणः जान ला ग्या यनी न गर्नु ग न्या काम प्राणां न भया यनी गर्नु ६८ उ र्ज ने सह संगे न सु ज नो पी वि न
श्रु पी ॥ सु र्जा प्र स नं जल मि त्या कु क र्द मे क लु स्त्री य ने ६९ उ र्ज न शं ग प या य नीः स र्ज न य नी ना
सिद्ध क सी भ न्या निर्म जल हिलो का संग ले हिले ऊं छ ६९ रु धि ज य ति उ र्भि द्ये गो भि र भ्या ग
नो जि न ॥ जि ना य न व ना ना री व स्त्र सा स्त्र जि ना स भा

व नी ग ने को उ र्भि द्ये ना श ऊं छ गाई ले भ्र म्या ग न क न ना श ऊं छे न व रा व र आ ई र हं छ ध न ऊ
न्या ले स्त्री व स्य ऊं छ ग र्द व स्त्र ले सा स्त्र ले सा भा जि दू छ २०० इति श्री चान के सार सं ग्र हे दि ति

क क ना कि कि

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	00

2400

2400

7



2400

ASHA ARCHIVE

